NJESR/January 2019/Volume-1/Issue-1 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2019.1.1.23-29

''शेखावाटी क्षेत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का शिक्षकों के मनोबल पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन''

डॉ. कमलेश सैनी* डॉ. सुभाष चन्द्र सैनी**
*** प्राचार्या, श्रीमती सरला परसरामपुरिया शिक्षा शास्त्री महाविद्यालय, डूण्डलोद, झुन्झुनू**
मो. 9602007758 Email: sainikamlesh908@gmail.com
****प्राचार्य, माँ भारती टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डूण्डलोद, झुन्झुनू**
मो. 9314277137, Email: drsubhashsaini10@gmail.com
(Received 1January 2019/Revised 15 January 2019/Accepted 25 January 2019/Published 30January 2019)

प्रस्तावना–

शिक्षक वास्तव में मनुष्य को सच्चे अर्थों में मानवीय गुणों से सुसज्जित करता है, बालक में छिपी प्रतिभाओं को बाहर निकालकर उन्हें सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। शिक्षक के बारे में विलियम जेम्स ने कहा है कि, "शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य विद्यार्थियों में उन आदतों को विकसित करना और सिखाना है, जो उसके लिए जीवनभर लाभप्रद रहें। शिक्षा सदाचार के लिए है और सदाचार ही बच्चों में अच्छी आदतों का निर्माण करता है।"

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति को सुसम्पन्न बनाने के लिए शिक्षक की भूमिका अत्यावश्यक है। एक सच्चा शिक्षक मानवता का उद्घोषक, संस्कृति का संदेशवाहक और जागरूक व कर्तव्यनिष्ठ नागरिक होता है। बच्चों का अधिकांश समय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में ही व्यतीत होता है और इस दौरान वे अपने शिक्षकों के न केवल सम्पर्क में आते हैं, वरन् उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनका अनुसरण भी करते हैं। अतः पाठशालाओं में शिक्षकगण बच्चों के भविष्य को सुधार सकते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों की अहम् भूमिका होती है, क्योंकि शिक्षकों के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप बच्चों में परिलक्षित होती है। अतः शिक्षकों को स्वयं उच्च चरित्र का आदर्श स्थापित कर बच्चों के चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व को मुखरित करने के लिए अपना अमूल्य योगदान देना चाहिए। शिक्षकों का कार्य केवल रोजी–रोटी कमाना मात्र हीं नहीं है, वरन् उससे भी बहुत ऊँचा है। समाज व देश के बच्चे शिक्षकों से बहुत आशा रखते हैं। तभी तो देश के बच्चे शिक्षकों के सुपर्द किए जाते हैं, ताकि जब वे पढकर निकलें, तो वे एक आदर्श नागरिक बन सकें। ऐसे में शिक्षकों में पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव अपने आप जागृत होना चाहिए।

Created by Universal Document Converter

तभी वे कुछ कर सकते हैं, क्योंकि यदि वे अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा से नहीं करते हैं तो, यह बच्चों के साथ अन्याय होगा, जिनके भविष्य निर्माण की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई है।

विद्यालय का संस्थागत वातावरण शिक्षा का औपचारिक अभिकरण है। यह बालक के सामाजिक अनुभवों को विस्तार देता है। बालक जब परिवार से शिक्षा ग्रहण करने के बाद समाज में प्रवेश करता है तो वह विद्यालय के सम्पर्क में आता है। विद्यालयीय शिक्षा एक विचारित प्रयास है जो शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य चलती है।

मनोबल सामाजिक कल्याण और मनोवैज्ञानिक आयाम की ऐसी भावना है, जिनका सम्बन्ध व्यक्ति के, स्वयं के और कार्य वातावरण के प्रति अभिवृत्तियों से होता है। मनोबल में अभिवृत्ति अध्ययन –अध्यापन कार्य की ओर रहती है और व्यक्ति उच्च मनोबल के आधार पर ही कार्य करता है। जिससे उसे जीवन में पूर्ण सन्तोष प्राप्त हो सके। संक्षेप में यहाँ अध्यापकों के मनोबल से तात्पर्य जिस परिश्रम और लगन एवं इच्छा शक्ति के साथ अध्यापक जन–सामान्य को शिक्षित बनाने के लिए जितना प्रयास करता है, से है।

इस प्रकार शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का शिक्षकों के मनोबल पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है, यह जानना शोधार्थी के लिए रूचिपूर्ण विषय बन जाता है।

अध्ययन का महत्व :–

संस्थागत वातावरण उन विधियों के संचित प्रभावों का परिणाम है जिसमें प्रधानाध्यापक, अध्यापकों के साथ अध्यापक अन्य अध्यापकों के साथ अन्तःक्रिया करते हैं।

किसी विद्यालय के संस्थागत वातावरण ऐसे सभी उपायों को शामिल किया जाता है जिससे विद्यालय में विद्यार्थियों को संस्कार देने वाला वातावरण मिले, विद्यालय में ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिनको देखकर हृदय में राष्ट्रीय भावना, मानव मात्र के प्रति कल्याण भाव, सत्कर्म करने की अभिलाषा, कला प्रदर्शन आदि भाव जागृत हो सके। ऐसे वातावरण के अभाव में छात्र शिक्षक की बात नहीं सुनना चाहेगा, ज्ञान ग्रहण करने की उत्सुकता पैदा नहीं हो सकती।

Created by Universal Document Converter

मनोबल सामान्य कल्याण और मनोवैज्ञानिक आयाम की ऐसी भावना है जिनका सम्बन्ध व्यक्ति के स्वयं के और कार्य वातावरण के प्रति अभिवृतियों से होताहै। मनोबल में अभिवृति अध्ययन–अध्यापन कार्य की ओर रहती है और व्यक्ति उच्च मनोबल के आधार पर ही कार्य करता है जिससे उसे जीवन में पूर्ण संतोष प्राप्त हो सके। संक्षेप में यहां अध्यापकों के मनोबल से तात्पर्य जिस परिश्रम और लगन एवं इच्छा शक्ति के साथ अध्यापक सामान्य को शिक्षित बनाने के लिए जितना प्रयास करता है, से है।

अतः शोधार्थी द्वारा वर्तमान स्थिति में अध्यापकों की दिग्भ्रमित स्थिति की दृष्टि से यह अत्यन्त आवश्यक प्रतीत हुआ कि शेखावाटी क्षेत्र के विद्यालयों के संस्थागत वातावरण की स्थिति का अध्ययन कर शिक्षा जगत के सामने निश्चित निष्कर्ष प्रस्तुत करे। इस शोध का इस दृष्टि से महत्व अधिक बढ़ जाता है कि इसमें न्यादर्श में उन अध्यापकों को लिया गया है जो कि शिक्षा के एवं इस शोध के निष्कर्षों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचाने में भविष्य में संवाहक का कार्य करेंगें।

अध्ययन का औचित्य :–

पूर्व में किये गये शोध कार्यों का पुनरावलोकन करते समय शोधार्थी ने पाया है कि शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का शिक्षकों के मनोबल पर पड़ने वाले प्रभाव को संयुक्त रूप से लेकर किया गया अध्ययन अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। इसलिए शोधार्थी में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि इस समस्या को अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया जाये तथा इस अछूते पहलू के औचित्य की प्रासंगिकता को ध्यान रखते हुए ''शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का शिक्षकों के मनोबल पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन'' विषय को अपने शोधकार्य हेतु शोध शीर्षक के रूप में चयनित किया है। शोधार्थी का विश्वास है कि इस अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम शिक्षा जगत के लिए अवश्य ही लाभप्रद सिद्ध होंगे तथा आने वाले समय में त्रासदी तथा संक्रमण से शिक्षा जगत को मुक्त कर सकेंगे।

Created by Universal Document Converter

समस्या कथन :–

''शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का शिक्षकों के मनोबल पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का अध्ययन करना।
2. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मनोबल का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।
2. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मनोबल का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन :–

1. शोध कार्य हेतु शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों को ही लिया गया है।
2. शेखावाटी क्षेत्र की सात तहसीलों में से दो तहसीलों (नवलगढ़, मण्डावा) के अन्तर्गत आने वाले उच्च प्राथमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है।
3. कुल 220 शिक्षकों (110 सरकारी + 110 निजी) को सम्मिलित किया गया है।
4. यह अध्ययन शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित है।

Created by Universal Document Converter

शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

संस्थागत वातावरण प्रश्नावली :–

डॉ. शिववेन्द्र प्रताप सिंह एवं डॉ. अली इमान द्वारा निर्मित संस्थागत वातावरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

मनोबल मापनी :–

डॉ. साजिद जमाल एवं डॉ. अब्दुल रहीम निर्मित मनोबल मापनी का प्रयोग किया गया है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या–1

शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के संस्थागत वातावरण मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
31	05	14.5	28.92 से 31.74 तक	3.98से 5.67 तक	13.51 से 16.15 तक

Created by Universal Document Converter

विश्लेषण :–

उक्त सारणी में शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के संस्थागत वातावरण के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार 28.92 से 31.74 प्रतिशत सरकारी शिक्षकों का संस्थागत वातावरण औसत से उच्च स्तर पर पाया गया। 3.97 से 5.67 प्रतिशत सरकारी शिक्षकों का संस्थागत वातावरण औसत तथा 13.51 से 16.15 प्रतिशत सरकारी शिक्षकों का संस्थागत वातावरण औसत से निम्न पाया गया।

सारणी संख्या –2

शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मनोबल के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
15	61	0	8.24 से 10.25 तक	38.5 से 42.15 तक	0 से 0 तक

विश्लेषण :–

उक्त सारणी में शेखावाटी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मनोबल के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार 8.24 से 10.25 प्रतिशत सरकारी शिक्षकों का मनोबल औसत से उच्च स्तर पर पाया गया। 38.5 से 42.15 प्रतिशत सरकारी शिक्षकों का मनोबल औसत तथा 0 से 0 प्रतिशत सरकारी शिक्षकों का मनोबल औसत से निम्न पाया गया।

Created by Universal Document Converter

संदर्भग्रन्थ सूची

- आर. एल. सिनैलेर एलिमैंटरी स्कूल एजुकेशन एन्वायमेन्टस डक्टर्स स्कूल्स नैशनल एलिमैंटरी प्रिंसिपल वाल्यूम 42, सं. 6, पृ. सं. 50।
- शर्मा मोतीलाल एन इन्वेस्गिेशन इन टो आर्गेनाईजेशनल कलाइमेट ऑफ सेकेण्डी स्कूल्स इन राजस्थान। पी.एच.डी. थिसिस एम.एस. युनिवर्सिटी बड़ौदा पृ.सं. 33।
- अग्रवाल जे.सी. शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध के आधार (2008), अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ.सं. 265।
- अग्रवाल जे.सी. शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध के आधार (2008), अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ.सं. 267।
- अग्रवाल जे.सी. शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध के आधार (2008), अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ.सं. 272।
- शर्मा आर.ए. (2003) विद्यालय प्रबन्ध, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो
- सी. रिचार्ड लौन्सडेल (2008)मैनटेनिंग दी आर्गेनाईजेशन इज डायनेमिक थर्ड ईयर बुक ऑफ दी नैशनल सोसायटी फॉर दी स्टडी ऑफ एजूकेशन

Created by Universal Document Converter